# सुनील नौटियाल- संक्षिप्त जीवनी

प्रो. (डॉ.) सुनील नौटियाल
***(अलेक्जेण्डर वॉन हम्बोल्ट फैलो)***
Prof. (Dr.) Sunil Nautiyal
***(Alexander von Humboldt Fellow)***
निदेशक/Director
गोविंद बल्लभ पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान
G.B. Pant National Institute of Himalayan Environment
(पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार)
(Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Government of India)
कोसी - कटारमल, अल्मोड़ा - 263 643, उत्तराखंड, भारत
Kosi - Katarmal, Almora – 263 643, Uttarakhand, India

प्रो. सुनील नौटियाल वर्तमान में जीबी पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान (एनआईएचई), कोसी-कटारमल, अल्मोडा, 263643, उत्तराखंड, भारत में निदेशक के रूप में कार्यरत हैं।

डॉ. नौटियाल, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन संस्थान (ISEC) बेंगलुरु के पारिस्थितिक अर्थशास्त्र और प्राकृतिक संसाधन केंद्र (CEENR), बेंगलुरू में प्रोफेसर के पद पर हैं, और लद्दाख विश्वविद्यालय में मानद प्रोफेसर हैं।

डॉ सुनील नौटियाल एक सामाजिक-पारिस्थितिकी विज्ञानी हैं। उनकी विशेषज्ञता में प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और जैव विविधता संरक्षण, उत्पादन प्रणाली विश्लेषण, संरक्षित क्षेत्र प्रबंधन और मानव वन्यजीव संघर्ष और सह-अस्तित्व, पारिस्थितिक तंत्र की गतिशीलता, पारिस्थितिक मॉडलिंग, भूदृश्य (landscape) अनुसंधानके लिए भौगोलिक सूचना प्रणाली और सुदूर संवेदन (रिमोट सेंसिंग) का उपयोग, शहरी-ग्रामीण अंतराफलक (interface) और उस तंत्र का सतत स्थिरता और विकास, जलवायु परिवर्तन, सतत आजीविका और सामाजिक-पारिस्थितिकी विकास इत्यादि प्रमुख हैं।

प्रो. नौटियाल, सतत परिदृश्य विकास के लिए एक एकीकृत अंतःविषय दृष्टिकोण विकसित करने के लिए काम करते हैं । इसमें भारत के विभिन्न कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधन संरक्षण और प्रबंधन और समुदायों की आजीविका से जुड़े नीति और व्यवहारिक परिवर्तनों के प्रभाव का आकलन करने के लिए पारिस्थितिक और सामाजिक विज्ञान के दृष्टिकोण को एकीकृत करने के लिए एक परिचालन ढांचा शामिल है।

उन्होंने 16 पुस्तकों सहित 200 से अधिक वैज्ञानिक शोध पत्र/लेख प्रकाशित किए हैं, जिनमें अच्छे उद्धरण हैं। वह कई अंतरराष्ट्रीय/राष्ट्रीय पत्रिकाओं के संपादकीय एवं समीक्षक बोर्ड के सदस्य हैं । उन्होंने वर्ष 2010-2011 और 2013 के दौरान पर्यावरण प्रणाली अनुसंधान केंद्र (सेंटर फॉर एनवायर्नमेंटल सिस्टम रिसर्च), कैसल विश्वविद्यालय - जर्मनी में विजिटिंग साइंटिस्ट के रूप में काम किया है।

वर्ष 2003 में जापान सरकार से उन्हें प्रतिष्ठित जे.एस.पी.एस रिसर्च फ़ेलोशिप (JSPS- PDF Fellowship) पुरस्कार प्रदान किया गया. जिसके तहत उन्होंने टोक्यो विश्वविद्यालय में 2003 से 2005 तक शोध कार्य किया।

वर्ष 2006 में प्रो। नौटियाल को जर्मनी में प्रतिष्ठित अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट फैलोशिप (Alexander von Humboldt Fellowship) से सम्मानित किया गया, इस पुरस्कार को वैज्ञानिक दुनिया में शोध के लिए सर्वश्रेष्ठ पुरस्कारों में से एक एक बेहतरीन सम्मान के लिए जाना जाता है.

हम्बोल्ड्ट पुरस्कार के तहत उन्होंने जर्मनी स्थित Leibniz-Centre for Agricultural Landscape Research (ZALF) में दो वर्षों तक शोध कार्य किया तथा जर्मनी और भारत के बीच शोधकार्यशीलता हेतु उच्चतम प्रयास

किए। जर्मनी में ZALF द्वारा डॉ. नौटियाल को उनके उत्कृष्ठ शोध के लिए 2007-2008 के लिए सर्वश्रेष्ठ शोधकर्ताओं में से एक के रूप में सम्मानित किया गया ।

Leibniz-Centre for Agricultural Landscape Research (ZALF) द्वारा डॉ. नौटियाल को ZALF के साथ उनके शानदार वैज्ञानिक सहकार्यता /सहयोग और उत्कृष्ट वैज्ञानिक प्रदर्शन के लिए वर्ष 2014 में ZALF-Fellow के रूप में सम्मानित किया गया।

प्रोफेसर नौटियाल ने 2011-2020 की अवधि के लिए अपने शोध कार्य/प्रकाशन/उद्धरण/एच-इंडेक्स के लिए आई.सी.एस.एस.आर., भारत सरकार के सभी शोध संस्थानों में देश भर के शीर्ष तीन वैज्ञानिकों की सूची में स्थान प्राप्त किया.

वर्ष 2018 में प्रोo नौटियाल को राष्ट्रीय पारिस्थितिकी संस्थान (National Institute of Ecology) द्वारा उनके योगदान पर उत्कृष्टता का प्रमाण पत्र एवं उन्हें NIE फेलो के रूप में चयनित करके किया गया।

वर्ष 2019 में आयोजित 106वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस (जिसका उद्घाटन भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा किया), में डॉ. नौटियाल को प्लेटिनम जुबली पुरस्कार व्याख्यान से सम्मानित किया गया.

वर्ष 2023 में सामाजिक-पारिस्थितिक अनुसंधान पर उनके योगदान के लिए उन्हें प्रतिष्ठित वाई.पी.एस. पांगती मेमोरियल अवार्ड प्रदान किया किया।

वर्ष 2024 में उन्हें हिमालयी पर्यावरण संवर्धन में अति विशिष्ट योगदान के लिए लौह पुरुष पं. देवराम नौटियाल पर्यावरण पुरस्कार (2024), लौह पुरुष देवराम नौटियाल फाउंडेशन, नौटी, चमोली द्वारा प्रदान किया गया.

उन्होंने जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता संरक्षण, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, पारिस्थितिक मॉडलिंग, ग्रामीण पारिस्थितिकी तंत्र और आजीविका विकास, परिदृश्य अध्ययन में भौगोलिक सूचना प्रणाली-सुदूर संवेदन, चक्रीय अर्थव्यवस्था, घरेलू कार्बन पदचिह्न के विषयगत क्षेत्रों में 40 अनुसंधान परियोजनाओं में परियोजना निदेशक / प्रमुख अन्वेषक के रूप में भाग लिया है।

प्रो. नौटियाल को जर्मनी और भारत के बीच राजनयिक संबंधों की 60वीं वर्षगांठ मनाने और 'जर्मनी और भारत-अनंत अवसर' के आदर्श वाक्य के साथ वैज्ञानिक सहयोग को मजबूत करने के लिए हम्बोल्ट कोलेग पुरस्कार मिला है।

डॉ. नौटियाल ने विभिन्न अनुदान संस्थानों द्वारा अपने प्रयासों सहायता प्राप्त कर देश भर में 30 राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन/कार्यशालाएं/प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए हैं। उन्होंने सिडनी विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं के लिए फील्ड स्कूल कार्यक्रम का समन्वय किया है।

प्रो. नौटियाल 2013 से 2016 तक नॉर्डिक देशों (डेनमार्क, नॉर्वे, स्वीडन, फिनलैंड और आइसलैंड) के छात्रों के लिए "भारत में पर्यावरण का दृष्टिकोण - प्रकृति-अर्थव्यवस्था-समाज इंटरफ़ेस के अध्ययन में मुद्दे और तरीके" विषय पर आईएसईसी-एनसीआई अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के समन्वयक रहे।

डॉ. नौटियाल को विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नव भारत निर्माण-नये भारत के निर्माण, आई.आई.एस.एफ. (2020 से आगे) के जूरी सदस्य के रूप में नामांकित किया गया। वर्तमान में वह भारत में अनुसंधान और विकास कार्यों के लिए गठित विभिन्न मंत्रालयों की विशेषज्ञ समितियों के सदस्य हैं।

उन्हें राष्ट्रीय कृषि विज्ञान कोष (एनएएसएफ) भारत सरकार, के कृषि में सामाजिक विज्ञान और नीतियों के रणनीतिक क्षेत्र के लिए विशेषज्ञ सदस्य के रूप में नामित किया गया है। भारत का. डॉ. नौटियाल विभिन्न विभागों/संस्थानों के अध्ययन बोर्ड के सदस्य और विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों में पीएचडी के लिए पंजीकृत छात्रों के लिए डॉक्टरेट समितियों में विशेषज्ञ के रूप में कार्यरत हैं।

डॉ. नौटियाल नीति और व्यवहार परिवर्तन के प्रभाव का आकलन करने के लिए पारिस्थितिक और सामाजिक विज्ञान के दृष्टिकोण को एकीकृत करने के लिए भारत, जर्मनी, बांग्लादेश, ऑस्ट्रेलिया, जापान, नेपाल और यूके के विद्वानों की अंतर-अनुशासनात्मक टीमों के साथ काम कर रहे हैं।

अनुसंधान और वैज्ञानिक सहयोग के उद्देश्य से प्रो. सुनील नौटियाल ने 40 से अधिक बार विभिन्न देशों का दौरा किया है और अमेरिका, जापान, जर्मनी, श्रीलंका, बांग्लादेश, यूनाइटेड किंगडम, चीन, कनाडा, रूस, ताइवान, कोस्टारिका, इटली, ऑस्ट्रिया, वियतनाम, भूटान, सयुंक्त अरब अमीरात, इटली इत्यादि देशों के संस्थानों और विश्वविद्यालयों में प्रतिनिधित्व किया है।

**मार्गदर्शन / पर्यवेक्षण- पोस्ट-डॉक्टोरल अध्येता, डॉक्टरल (PhD), प्रशिक्षुता (Internship).**

प्रो. सुनील नौटियाल के मार्गदर्शन में सात शोधार्थी डॉक्टरेट (PhD) की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं, और वर्तमान में कुछ शोधार्थी उनके दिशानिर्देशन में पीएचडी का कार्य कर रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर उन्होंने 51 प्रशिक्षु छात्रों का उनके मास्टर / स्तानक शोध के लिए मार्गदर्शन किया जो कि भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों से सम्बंधित थे (अधिकांश छात्रों को डॉ. नौटियाल की अनुसंधान परियोजनाओं से अध्येतावृत्ति (fellowship) हेतु सहायता दी गई)

अंतर्राष्ट्रीय स्तर प्रो. नौटियाल ने 08 शोधार्थियों को उनके मास्टर और पी.एच.डी. कार्य के लिए मार्गदर्शन किया जो कि संयुक्तराज्यअमेरिका, जर्मनी, अफ्रीका, नीदरलैंड, मैक्सिको के संस्थानों और विश्वविद्यालयों से सम्बंधित थे। उनके द्वारा यह कार्य सहयोगीअनुसंधान कार्यक्रम (international research collaboration) के तहत किया गया।

**Weblinks:**

https://scholar.google.co.in/citations?user=rkFf6cQAAAAJ&hl=en

https://orcid.org/0000-0002-1481-7754

https://www.scopus.com/authid/detail.uri?authorId=7003824834

https://publons.com/researcher/3700045/sunil-nautiyal/

https://www.researchgate.net/profile/Sunil_Nautiyal